BSKC – 105

बी.ए. आनर्स (संस्कृत) कार्यक्रम

(बी.ए.एस.के.एच.)

सत्रीय कार्य

(जुलाई, **2023** सत्र के लिए)

BSKC – 105 लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

बी.ए. आनर्स (संस्कृत) कार्यक्रम

संस्कृत-कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य **(2023)**

पाठ्यक्रम कोड : **BASKH/BSKC -105/2023**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य **(TMA)** है। सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : ....

दिनाँक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ्रग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ्रग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ्रग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथि:

जुलाई, 2023 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2024

सत्रीय कार्य : **BSKC – 105 लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)**

पाठ्यक्रम कोड **BSKC – 105**

पाठ्यक्रम शीर्षक : **लौकिक संस्कृत साहित्य (नाटक)**

सत्रीय कार्य : **BSKC – 105/TMA/2023**

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न : - **10X3=30**

1. अधोलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए: -

(अ) ताते धनुर्नमयि सत्यमवेक्षमाणे

मुञ्चानि मातरि शरं स्वधनं हरन्त्याम् ।

दोषेषु बाह्यमनुजं भरतं हनानि

किं रोषणाय रुचिरं त्रिषु पातकेषु ॥

अथवा

हृदय ! भव सकामं यत्कृते शङ्कसे त्वं

शृणु पितृनिधनं तद् गच्छ धैर्यं च तावत् ।

स्पृशति तु यदि नीचो मामयं शुल्कशब्द-

स्त्वथ च भवति सत्यं तत्र देहो विशोध्यः ॥

(ब) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या

नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥

अथवा

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे

विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला ।

तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं

मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि ॥

(ग) कौटिल्यः कुटिलमतिः स एष येन

क्रोधाग्नौ प्रसभमदाहि नन्दवंशः ।

चन्द्रस्य ग्रहणमिति श्रुते सनाम्नो

मौर्येन्दोर्द्विषदभियोग इत्यवैति ॥

अथवा

ये याताः किमपि प्रधार्य हृदये, पूर्वं गता एव ते

ये तिष्ठन्ति, भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः ।

एका केवलमेव साधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका

नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम ॥

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न : - **5X5=25**

2. संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में 'संवाद-सूक्त सिद्धान्त' का उल्लेख कीजिए ।

3. भास विरचित उदयन कथाश्रित नाटकों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।

4. समवकार रूपक को लक्षण सहित स्पष्ट कीजिए ।

5. "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला" इस उक्ति को स्पष्ट कीजिए ।

6. कथानक क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : -

7. मुद्राराक्षस नाटक की ऐतिहासिकता का सविस्तार विवेचन कीजिए। **10**

8. प्रतिमानाटक के आधार पर राम का चरित्र-चित्रण कीजिए। **10**

9. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। **10**

10. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए: - **5X3=15**

(अ) भरतवाक्य (ब) अङ्कास्य

(स) चाणक्य (द) विदूषक